Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–346

B.A. (Part–III) (NC) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(आधुनिक काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'रश्मिरथी' कितने सर्गों में विभाजित है ? द्वितीय सर्ग की कथावस्तु किन **दो** पात्रों पर प्रकाश डालती है ?

(ii) 'रश्मिरथी' का मूल संदेश क्या है ?

(iii) यशोधरा क्यों कहती है—"सखि, वे मुझसे कहकर जाते" ?

(iv) जूही की कली कविता का मुख्य विषय क्या है ?

(v) "तुम मनाते हो जिसे कहकर दिवाली,
यह नहीं कोई प्रथा निराली ..... ।"
कवि का मंतव्य स्पष्ट कीजिए।

(vi) राष्ट्र देवता कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(vii) "हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।"
उक्त पंक्ति के रचनाकार का नाम बताते हुए इस साहित्यिक विधा के नाम का उल्लेख कीजिए।

(viii) ऋतुराज का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ix) दलित विमर्श क्या है ? संक्षेप में समझाइए।

(x) रस के प्रमुख अवयव कौनसे हैं ?

खण्ड–ब

2. नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल,
गुदड़ी में रखती चुन-चुनकर बड़े कीमती लाल।

3. किन्तु हाय! 'ब्राह्मण कुमार' सुन प्राण काँपने लगते हैं,
मन उठता धिक्कार, हृदय में भाव ग्लानि के जगते हैं।
गुरु का प्रेम किसी को भी क्या ऐसे कभी खला होगा ?
और शिष्य ने कभी किसी गुरु को इस तरह छला होगा ?

4. नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघवन बीच गुलाबी रंग।
था कि, नव इंद्रनील लघु शृंग
फोड़कर धधक रही हो कांत
एक ज्वालामुखी अचेत
माधवी रजनी में अश्रांत।

5. न जाने, नक्षत्रों से कौन
निमन्त्रण देता मुझको मौन!
सघन मेघों का भीमाकाश
गरजता है जब तमसाकार,
दीर्घ भरता समीर निःश्वास,
प्रखर झरती जब पावस-धार,

6. जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश,
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग-भरा उन्माद-राग
आँसू लेते वे पद पखार!
जो तुम आ जाते एक बार!

7. तुम किशोर
तुम तरुण
तुम्हारी राह रोककर
अनजाने यदि खड़े हुए हम :
कितना ही गुस्सा आए, पर, मत होना नाराज
वय! संधि के कितने ही क्षण हमने भी तो
इसी तरह फेनिल क्षोभों के बीच गुजारे
कान लगाकर सुनो : कहीं से आती है आवाज,
"भले ही विद्रोही हो,"
"सहनशील होती है लेकिन अगली पीढ़ी"
पर, अपने प्रति सहिष्णुता की भीख न हम माँगेंगे तुमसे
मीमांसा का सप्ततिक्त वह झाग
अजी, हम खुशी-खुशी पी लेंगे
क्रोध-क्षोभ के अवसर चाहे आ भी जाएँ
किन्तु द्वेष से दूर रहेंगे।

8. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी

बड़े-बड़े महारथी

अकेली निहत्थी आवाज़ को

अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें

तब मैं

रथ का टूटा हुआ पहिया

उसके हाथों में

ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ!

मैं रथ का टूटा पहिया हूँ

लेकिन मुझे फेंको मत

इतिहासों की सामूहिक गति

सहसा झूठी पड़ जाने पर

क्या जाने

सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!

खण्ड–स

9. ''रश्मिरथी काव्य खण्ड में कवि का मन्तव्य कर्ण के चरित्र के शील पक्ष, मैत्रीभाव तथा शौर्य का चित्रण करना है।'' सिद्ध कीजिए।

10. कामायनी का श्रद्धा सर्ग निराशा और पलायनवादी व्यक्ति के लिए आशा और कर्मठता का मधुर संदेश देता है। स्पष्ट कीजिए।

11. धूमिल द्वारा रचित 'मोचीराम' कविता में निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिए।

12. रस निष्पत्ति क्या है ? स्पष्ट कीजिए।